SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 2nd year **SESSION** – 2020 - 2022

SUBJECT - Assessment for learning

TOPIC NAME – Assessment of learning and Assessment for learning

DATE - 11-01-2022

अधिगम का आकलन और अधिगम के लिए आकलन में अन्तर

तुलना के आधार	अधिगम का आकलन Assessment of learning	अधिगम के लिए आकलन Assessment for learning
आधार	मुख्यत: व्यवहारवादी [पढ़ने के व्यवहार (गुणों) के आधार पर] संकलनात्मक आधारित	निर्माणात्मक, संज्ञानवादी एवं रचनावादी
आकलन का समय	निर्धारित अधिगम की समाप्ति पर इकाई एवं year के अंत में मुल्यांकन	सतत, सम्पूर्ण अधिगम के दौरान यह सतत कभी भी कक्षा-कक्ष के दौरान होता है।
पूर्वानुमन क्षमता	पश्चदर्शी (शिक्षक विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन और तदनुसार उनको विभिन्न श्रेणियों में रखना अधिगम की समाप्ति के उपरांत) अंत में (1st, 2nd, 3rd के श्रेणियों में रखना)	अग्रदर्शी (सम्पूर्ण अधिगम के दौरान विद्यार्थी का सतत आकलन एवं तदनुसार उसके अधिगम की उन्नति हेतु नियमित प्रतिपुष्टि) (विद्यार्थियों के गुण संबंधित सतत)
समय	फिक्स समय अवधिक (अधिगम का आकलन एक निश्चित समय के उपरांत ताकि विद्यार्थियों को उनकी शैक्षिक संप्राप्ति के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में रखा जा सके) (1 month, 6 month Annual पर यह होता है)	सतत एवं चक्रीय (शिक्षक और विद्यार्थी लगातार प्रगति का आकलन करते रहते हैं और आकलन की प्रतिपुष्टि के अनुसार नैदानिक शिक्षण) (यह हमेशा चलता है और निदान को शिक्षक कभी निकालता तो उसका उपचार करे")

विविधता एवं व्यक्तिगत भिन्नता	व्यक्तिगत भिन्नताओं की उपेक्षा आकलन की प्रक्रिया सभी (लोकतांत्रिक का ध्यान) विद्यार्थियों के लिए समान मुख्यत: लिखित परीक्षाओं पर आधारित होता है - परीक्षा के दौरान लोकतांत्रिक भावना का विकास (सबको एक प्रश्न, एक समय, सबको एक समान देखा जाता है) संकलनात्मक आकलन भी कहेंगे	व्यक्तिगत भिन्नताओं पर आधारित आकलन की प्रक्रिया में समाहित कार्यकलापों में विभिन्नता यथा सहपाठी मूल्यांकन, सतत मूल्यांकन आदि। (अधिगम विकास संबंधित विभिन्नताओं का प्रयोग किया जाता है) इसे निर्माणात्मक आकलन भी कहेंगे। formative assessment
	बच्चे के व्यवहार से संबंधित आकलन	पाठ के बीच-2 में होता है। बच्चे के सृजनात्मकता पर निर्णय करता है।
अधिगम की प्रकृति	मुख्यत: ~~निर्माणात्मक~~ योगात्मक सत्र के अन्त में.	विवरणात्मक (यह बच्चों की कमी को अर्थपूर्ण समझने का प्रयास करता है)
नैदानिक / उपचारात्मक प्रकृति	गैर उपचारात्मक (क्योंकि आकलन का उद्देश्य शैक्षिक संप्राप्ति का श्रेणीकरण) (जितना नंबर आ गया उसी आधार पर श्रेणीकरण)	उपचारात्मक (आकलन का उद्देश्य मुख्यत: सतत प्रतिपुष्टि के आधार पर अधिगम को प्रभावी बनाना।
गुणात्मक	मूलत: परिमाणात्मक (इसका संबंध अंक, स्कोर से है)	मूलत: गुणवत्तापरक क्योंकि इसमें शिक्षक व विद्यार्थी निरंतर अधिगम की गुणवत्ता का निर्णय साझा करते हैं।
केन्द्र	मुख्यत: शिक्षक उन्मुख (शिक्षक केन्द्रित)	शिक्षक व विद्यार्थी उन्मुख (बालकेन्द्रित) दो सक्रिय (शिक्षक-विद्यार्थी)

- अधिगम के आकलन में ~~केवल~~ परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के साधि इसमें विभिन्न प्रकार के उत्पादक और प्रदर्शन भी सम्मिलित होते हैं, जैसे - प्रदर्शनियाँ, निष्पादन, प्रस्तुतीकरण, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टस, पोर्टफोलियो या अन्य विभिन्न प्रकार के लिखित, मौखिक आदि का इस्तेमाल कर सकते हैं।

अध्यापकों की भूमिका

- कक्षा - कक्ष में विद्यार्थियों को जो पढ़ाया जाता है और उसमें जो अध्यापक अपने सम्पूर्ण शिक्षण कौशल का प्रदर्शन करता है तो ये सभी सभी क्रियाओं का समावेश बालकों में हो जाता है, और जो अध्यापक इन्हीं को जो कुछ भी विद्यार्थी को देता है उसे प्राप्त करने के लिए अधिगम का आकलन करता है।

- और इस अधिगम का आकलन दो कक्षा-कक्ष में या बाहर बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर गंभीरता से प्रभावित करते हैं।

- इसमें अध्यापक जितने भी शैक्षिक, गैर शैक्षिक और पोर्टफोलियो, प्रदर्शनियाँ, प्रोजेक्ट्स विधि से जो अधिगम का आकलन से अध्यापको का कर्त्तव्य है कि शिक्षार्थियों के अधिगम की सही-2 सूचना को और साक्ष्यों को विद्यार्थियों और अभिभावकों को बता देना चाहिए।

- शिक्षण एवं आकलन दो निरंतर संचालित होने वाली प्रक्रियाएँ है।

- अधिगम के आकलन से हमें कक्षा-कक्ष में छात्रो के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनो की जानकारी और विषय के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति किस सिमा तक हुई है। तथा शिक्षण किस तक सफल रहा है तो इसके बाद अधिगम का आकलन किया जाता है।